







## अनमोल दावा

संसाधन की कमी नहीं, कमजोर इच्छा शावित के कारण ज्यादातर लोग विफल होते हैं।

### आतंकवाद को खाद-पानी मुहैया देने वाले पाकिस्तान भारत पर आरोप लगाने से पहले अपनी गिरेबां में झाकें

पाकिस्तान की समस्या यह है कि जब भी वह भारत के खिलाफ अपने किसी एजेंडे को हकीकत में तब्दील करने में नाकाम होता है या फिर खुद को गंभीर आरोपों के कठघरे में पाता है, तब भारत की ओर अंगूली उठा कर खड़ा हो जाता है। हालांकि ऐसा करने से खुद उसके ही कमजोर होने का एक संदेश निकलता है, लेकिन ऐसा लगता है कि बार-बार शर्मिंदी उठाने के बावजूद उसे भारत पर आरोप लगाने में कोई असहजता नहीं महसूस होती।

सचाल है कि क्या अब इस तरह की गतिविधियां पाकिस्तान की आदत में तब्दील हो गई हैं कि अपनी सीमा में मुश्किलों के हाल निकलने के बजाय वह किसी भी सामर्थ्य में भारत का नाम लेकर दुनिया और पाकिस्तानी अवाम को गुम्हार करना प्राथमिक समझता है! दरअसल, गुरुवार को पाकिस्तान ने दावा किया कि उसके पास पिछले वर्ष सियालकोट और रावलकोट में जैश-ए-मोहम्मद और लश्कर-ए-तैयबा से जुड़े दो पाकिस्तानी आतंकवादियों की हत्या और च्छारीतीय एजेंट्ज के बीच संबंध होने के च्योर सबूतजू हैं। अब वैश्विक स्तर पर पाकिस्तान को जिस रूप में देखा-समझा जाता है, उसमें इस आरोप को लेकर शायद ही कोई देश गंभीर होता हो। मगर इससे पाकिस्तान की मंशा एक बार फिर सामने आई है।

इस तरह के उथले और निराधार आरोपों की सच्चाई यह है कि जिन आतंकवादियों के मारे जाने के बारे में पाकिस्तान ने भारत पर अंगूली उठाई है, उनसे संबंधित आतंकी संगठनों को पालने के लिए कठघरे में वह खुद खड़ा है। जैश-ए-मोहम्मद और लश्कर-ए-तैयबा के पाकिस्तान स्थित ठिकानों से अपनी आतंकी गतिविधियां संचालित करने के मस्ले पर अंतर्राष्ट्रीय सहयोग समझेन्टों में भी सचाल उठ चुके हैं। ऐसे में भारत का यह जावाब बिल्कुल उचित है कि पाकिस्तान की ओर से इस मामले में जो भी कहा गया है, वह भारत शिरोधी ढूढ़ा और दुर्भावना से भरे प्रवार का उसका नवीनतम प्रयास है; पाकिस्तान जो बोएगा, वही काटेगा और उसकी अपनी कहानों के लिए दूसरों को जिम्मेदार ठहराना न तो न्यायोचित हो सकता है, न ही समाधान। सच यह है कि पाकिस्तान अपने दावे में ही दोनों आतंकवादी संगठनों और उनके सदस्यों के अपने सीमा-क्षेत्र में मौजूद होने की पुष्टि कर रहा है।

दरअसल, ताजा आरोप लगाते हुए पाकिस्तान ने यह सच्चाना भी जरूरी नहीं समझा कि उसके रीमा क्षेत्र में आतंकवादी संगठनों से जुड़े लोग च्याकिस्तानी नामिक्रज और आतंकी पहचान के बावजूद शासन की गिरफ्त में क्यों नहीं थे! आतंकवादियों की हरकतों के बारे में दुनिया जानती है कि वे कानून ही मासूम और निर्दिष्ट लोगों की हत्या करते हैं, आतंक फैलाते हैं, तो खुद पाकिस्तान स्थित ठिकानों की संगठन या एजेंसी सीधी टकराव में वे मारे जा सकते हैं। लेकिन महज शैक की कवाज हस्ते भर रखा है कि वे अपने निवारण के साथ भी टकराव में वे मारे जा सकते हैं। ऐसे एक दृश्यमान दावा को जारी करने की चाही है। जैश-ए-मोहम्मद, लश्कर-ए-तैयबा और अन्य संगठन पाकिस्तान स्थित ठिकानों से भारत में जिन आतंकवादी गतिविधियों के अंजाम देते हैं, उसे संरक्षण देने का मुख्य आरोपी खुद पाक रहा है। अंदाजा इससे लागता जा सकता है कि 2017 में चीन में हुए ब्रिक्स सम्मेलन के घोषणापत्र में भी जैश-ए-मोहम्मद और लश्कर-ए-तैयबा जैसे पाकिस्तान आधारित संगठनों के खिलाफ निर्णायक कार्रवाई करने की ओर अपनी समर्पित लोगों की विवादित वार्ता आयी है। इसलिए आतंकवाद को खाद-पानी मुहैया कराने के आरोपों से खुद घिरा पाकिस्तान जो आरोप भारत पर लगाता है, उसके आईने में उसे खुद को देखना चाहिए।



मौसम



कर्क



तुला



मकर

## नई बहू को गैना लाने की तैयारी में था, लेकिन अंग्रेजों ने गोली उसके सीने में उतार दी

आत्माराम कोशा 'अमात्य'



संस्कृताधीनी कहीं जाने वाली नगरी राजनांदगांव, देश के प्रति मन्मित्रों वाले शहीदों के अपने शहर के चौक चौहाँ और सड़कों के नाम रखकर उन्हें सदा के लिए अपने रखने का स्मृत्यु प्राप्त है। इनमें से प्रमुख स्वतंत्र सेनानी वाल गणधर तिलक, जिसे शहीद रामाधीन गोंड का नाम प्रमुख है। बाल गणधर तिलक के नाम से पुराना गंड चौक से काली माई मंदिर बस स्टैंड रोड की सड़क जहां बिलकुल मार्ग के नाम से जाना जाता है वहाँ सड़क के महाराज अंग्रेजों द्वारा तिहारा जाना वाली सड़क को रामाधीन मार्ग के नाम से पुराना गंड चौक से काली माई मंदिर बस स्टैंड रोड की स्थापित है। बता दें कि जिले के डोंगासांग छुट्टीया क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले ग्राम घोरे व बादराटोला, स्वतंत्रता सेनानीयों के लिए विश्वास तौर पर यह जाता है। इस क्षेत्र के मार्गील और अंग्रेजों के लिए बाल गणधर तिलक का नाम से पुराना गंड चौक से काली माई मंदिर बस स्टैंड रोड की स्थापित है। बता दें कि जिले के डोंगासांग छुट्टीया क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले ग्राम घोरे व बादराटोला, स्वतंत्रता सेनानीयों के लिए विश्वास तौर पर यह जाता है। इस क्षेत्र के मार्गील और अंग्रेजों के लिए बाल गणधर तिलक का नाम से पुराना गंड चौक से काली माई मंदिर बस स्टैंड रोड की स्थापित है। बता दें कि जिले के डोंगासांग छुट्टीया क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले ग्राम घोरे व बादराटोला, स्वतंत्रता सेनानीयों के लिए विश्वास तौर पर यह जाता है। इस क्षेत्र के मार्गील और अंग्रेजों के लिए बाल गणधर तिलक का नाम से पुराना गंड चौक से काली माई मंदिर बस स्टैंड रोड की स्थापित है। बता दें कि जिले के डोंगासांग छुट्टीया क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले ग्राम घोरे व बादराटोला, स्वतंत्रता सेनानीयों के लिए विश्वास तौर पर यह जाता है। इस क्षेत्र के मार्गील और अंग्रेजों के लिए बाल गणधर तिलक का नाम से पुराना गंड चौक से काली माई मंदिर बस स्टैंड रोड की स्थापित है। बता दें कि जिले के डोंगासांग छुट्टीया क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले ग्राम घोरे व बादराटोला, स्वतंत्रता सेनानीयों के लिए विश्वास तौर पर यह जाता है। इस क्षेत्र के मार्गील और अंग्रेजों के लिए बाल गणधर तिलक का नाम से पुराना गंड चौक से काली माई मंदिर बस स्टैंड रोड की स्थापित है। बता दें कि जिले के डोंगासांग छुट्टीया क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले ग्राम घोरे व बादराटोला, स्वतंत्रता सेनानीयों के लिए विश्वास तौर पर यह जाता है। इस क्षेत्र के मार्गील और अंग्रेजों के लिए बाल गणधर तिलक का नाम से पुराना गंड चौक से काली माई मंदिर बस स्टैंड रोड की स्थापित है। बता दें कि जिले के डोंगासांग छुट्टीया क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले ग्राम घोरे व बादराटोला, स्वतंत्रता सेनानीयों के लिए विश्वास तौर पर यह जाता है। इस क्षेत्र के मार्गील और अंग्रेजों के लिए बाल गणधर तिलक का नाम से पुराना गंड चौक से काली माई मंदिर बस स्टैंड रोड की स्थापित है। बता दें कि जिले के डोंगासांग छुट्टीया क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले ग्राम घोरे व बादराटोला, स्वतंत्रता सेनानीयों के लिए विश्वास तौर पर यह जाता है। इस क्षेत्र के मार्गील और अंग्रेजों के लिए बाल गणधर तिलक का नाम से पुराना गंड चौक से काली माई मंदिर बस स्टैंड रोड की स्थापित है। बता दें कि जिले के डोंगासांग छुट्टीया क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले ग्राम घोरे व बादराटोला, स्वतंत्रता सेनानीयों के लिए विश्वास तौर पर यह जाता है। इस क्षेत्र के मार्गील और अंग्रेजों के लिए बाल गणधर तिलक का नाम से पुराना गंड चौक से काली माई मंदिर बस स्टैंड रोड की स्थापित है। बता दें कि जिले के डोंगासांग छुट्टीया क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले ग्राम घोरे व बादराटोला, स्वतंत्रता सेनानीयों के लिए विश्वास तौर पर यह जाता है। इस क्षेत्र के मार्गील और अंग्रेजों के लिए बाल गणधर तिलक का नाम से पुराना गंड चौक से काली माई मंदिर बस स्टैंड रोड की स्थापित है। बता दें कि जिले के डोंगासांग छुट्टीया क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले ग्राम घोरे व बादराटोला, स्वतंत्रता सेनानीयों के लिए विश्वास तौर पर यह जाता है। इस क्षेत्र के मार्गील और अंग्रेजों के लिए बाल गणधर तिलक का नाम से पुराना गंड चौक से काली माई मंदिर बस स्टैंड रोड की स्थापित है। बता दें कि जिले के डोंगासांग छुट्टीया क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले ग्राम घोरे व बादराटोला, स्वतंत्रता सेनानीयों के लिए विश्वास तौर पर यह जाता है। इस क्षेत्र के मार्गील और अंग्रेजों के लिए बाल गणधर तिलक का नाम से पुराना गंड चौक से काली माई मंदिर बस स्टैंड रोड की स्थापित है। बता दें कि जिले के डोंगासांग छुट्टीया क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले ग्राम घोरे व बादराटोला, स्वतंत्रता सेनानीयों के लिए विश्वास तौर पर यह जाता है। इस क्षेत्र के मार्गील और अंग्रेजों के लिए बाल गणधर तिलक का नाम से पुराना गंड चौक से काली माई मंदिर बस स्टैंड रोड की स्थापित है। बता दें कि जिले के डोंगासांग छुट्टीया क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले ग्राम घोरे व बादराटोला, स्वतंत्रता सेन







